

यत्र मध्वनत आह्लादनाम्बुक्लामनश्चत कासीवयाव द्वायां च यथाया
 दाव यथा द्वाया द्वाया नयायव च नडाक्लामन द्वाया धव कि नन न द्वाया
 गुलि अन्ध का न ता स या क मा ल ॥ १॥ अनाध मध्वि य नि ह्यं या या वि श्व
 ध्वना द्वाया का का सी कि ता ता उ नू ता ता स या मध्व स अ या म ॥ ॥ ॥
 मध्वि य द्वाया नि वि श्व ध्वना या क या न अ न का सी स वा स या क अ न य नि स य
 य द का नि ह्यं रु च का व ता द्वा ॥ १॥ य मा मध्व वि श्व नि मा न ॥ ॥ ॥

त्रिनाश्वदत्राद्यनयानिश्च न सांदास्यामिद्विक्रमम् ॥ ॥ धगुलिथायस
 त्राडाऊगुक्कामनूययनिमननधायचकनऊकरकयायूवडायनिमन
 ययागुलिमननदाद्ययायूवडागुलिअवस्यविय ॥ ॥ ॥ हवकिना
 समयहं यमिहिनयनिवगा यच्चयम्यनिरावन यूनवावाप्तियायि
 वा ॥ ॥ नसां कदात्रिनाहातिरुयवियवियागडा नयाभिकं रुयकायि
 नहुहुदावऊरयं ॥ ॥ हुडायमीगुक्कामनूयनसिनयूनवनयशल

[illegible]

[illegible]

सामं सामाधि कनक्षय ॥ ॥ दत्तवर्ष लकच्छीनाडमानसहीतश्वय
धिष्णामाहादवडाक्षसूर्यन आधात्रनायासुवाह ॥ ॥ स्वनूयनमुक्त
यनस्मिताकीनायनदमो गमातिवगयसा गङ्गातीकनामून ॥ ॥ रुजग
सुमतीसूक्तनधवगुलिनऊनं सासुलि लोकेया ना नायवियरुवक्ष्यथ
लंलीनयस्यायाकऊनअनीनगायहर्ष ॥ ॥ मयूखेसुस्यसविगुसेला
यदहनदीमी। तनहमसंनकाद्यावाहभ्याऊदकन ॥ ॥ वेमानिकाविष्

यद्वत्तु कुरुत्रगतागर्त ॥ ॥ डाकासूर्ययाजे लायं सै हस्तयाय रुवकी
वतन आकाशविमाने वृहा धिहा द्वा वकल मोल कर्त ॥ ॥ मयसा
उवद्वधक निरुगुद्ध म (धायिता) आदि सानवादि स्या नीय ययस्थि न
वीव ॥ ॥ नलसु दवने आकाससु सूक्ष्मया गुलिन कन मनसं स्या कल ह
ला गाध धावसा नीय ययया न कथं ॥ ॥ नस्ये वमरुसां वा लासु या
वालासु नाविषो वक म्य काध सा निवे ज लाय सव नावने ॥ ॥ अधिक्तासु
धना ॥

यथा उगुलिन कन दवला क रुद्र गंधर्व देख मन दयनी सहानत सुक
लद गास मान हला ॥ ॥ सूक्ष्म आत्मस्य रुगता वेद ययत्रियत्रिथ गे सि
व रुद्रालयिना काने रुगा रुवे विरु ॥ ॥ डा लली रुगती सा न सकल स
आधन सूक्ष्म रुल वेद सं धया दव धव रु कन नय स्या या वल न धी ध सूय
के धं रुका आध रुल ॥ ॥ रुग स रु सो सूर्या रुग दा ल्ये म रु रु रु रु
गशा यं म रुया यं या न रुया न रु य वे ध य रु ॥ ॥ रु नि रु रु वा ध रु या व रु
धना ॥

ला धला यात्रिमिहिन संसात्रयां सूऊया कथार्थनाया ता लमन्ना सूऊन उगः
सांसात्रसु अमृत्तलमखन हा यात्रन दा या द न ला धर्चि सूऊया ता मुनियाना
॥ २२ ॥ तमाभ कयनयनित मदिनि मदिनोदिनो धा सा घ ४ यत्रिनं ४ यानी न
यालिकान समुद्रया ॥ ॥ धनैकासूर्यन अधका न उधी स लु कं न विद्याः
वे वा द धम उदय ह या व उगसं सात्र धा धन दा या द विद्याना ॥ २३ ॥ उ
दिन दूदिन नित्यं म सुं जान सुमा श्रया उदया न दया न सा दसा कं काः

वतं त्वया ॥ ॥ यद्वा सूर्य उदय ह नं दा व सम सु ला कं उदय ह य यद्वा सूर्य
य अ सु ह न दा व सम सु ला कं अ सु ह य ध ला क सम सु उदय ह या या अ सु
ह या या का व न सूर्य कृष्णं ह का द ना ॥ २४ ॥ नू निया के ली न विष्णुं य यन
विष्णु व न्ध्या विष्णु ना व नं दा ह संज म निगम त्रसा य ॥ ॥ धु लि उ ग
सांसात्र या कूल ह या व सूऊन न य ह या या कथा य विष्णु व म धा न विष्णु
॥ २५ ॥ म यूम मालिनं संतु बाला का दिसु ति धर्त्री समाधि विष्णु नामाने

विष्णाय नमः यः यती ॥ ^{धना} डाक्का गंडुन सूर्यखा डाव डा यागु लि नय स्या सा
या व ^{धना} ण्णु धन विष्णाय वा ली ॥ ३५ ॥ डावा व नय सं ना ता सी क ८४ यन ना नि दान
जलं न स्या वलं क ही ^{धना} धूमन म रु सा नि धा ॥ ^{धना} डा लं ली ण्णु धन आरु दान
ह सूर्य समरु न ऊ या था ला कु ल धा ल आ व न य स्या या य म मा ला कु न ण्णु
ह व गु लि हा धा ध कं थ थ सूर्य या दू व न मा हा द व न आरु दान ॥ ३६ ॥ नि
व द न य व र्हि ता व न धा न समा धि ना न ऊ या रु व व ४ सं हा नू का धा क धू

६२
वरु दान ॥ ^{धना} थ थ ण्णु धन ध या व व न डा क सूर्य न मन सु व स ना या व मन
या च्छु या व वा द ॥ ३७ ॥ का र्क लं गंडु नं द द्वा नि व य र्म धि या नि ना म रु न य
स म दू न सु ना या म न व र्धि नी ॥ म रु द व न सूर्य सि धि ला हा थ वा द र्व
डा व न व धा द न य स्या या रु ल वि स ण्णु धन सूर्य या द्वा स मा हा द व न ला ह
नि न धि या व वि द्वा ना ॥ ३८ ॥ न न ४ ड मी ल यां व क ला व न वि धू ला व न न स्या द
य मि व या य य न य क जि नी व नी ॥ ^{धना} डा क्का सूर्य म रु द व न धि यां ला मि

का।
 खांटावहाला गधिमीखा भालसा यलरुलधिठवाना ॥ ~~१०॥~~ यत्रिविद्ययत्तस
 नयसुयनह्यर्धनद्विहा। अयगाहिनसह्यधी लूललाहयधाम्बद ॥
 डावलससुयया मनसवाक सनायदको माहादेवनधियावरुकेगथ
 भालसा गलनानयाकूलरुयाववाक सस्यादि नवीवूदत धियाथी ॥
 यिगानेगानिधिरुययादयन४दमयन ॥ दधुवच्युलनामात्रेसुसुवतवि
 ताकिनमू ॥ डाललीडाक्कासूर्यन थवअससुयनदरुयावविष्काकमि

10

तां गधिंकाचुलयाल वद्यामामरुयावविष्काव गायजीथ्चुलयालः
 वाक्कनयाकामधन थंचुलयाले कर्मसिद्धयादविष्काक साराहवधाम
 प्राक्का थंचुलयाल थथधुनियाना ॥ ~~१०॥~~ गोत्रित्वमवशादिमोलिनिवः
 धसित्वं सावित्रसित्वमसित्वकिवाचलक्ष्मी कास्यात्वमस्यमनूयिनिम
 दलक्ष्मी ह्वंमधवयामिहर्मगलगोत्रिमाग ॥ ॥ रुसंजीगथांकाचुल
 याल नाजीयनया लक्ष्मीवडगी काशीसमादयालक्ष्मी थथवानम्वाननः

मस्तककावयादावमुनियाना ~~मस्तक~~ मुनिनितां सनहवां दसुनीनहो धी
मंगलाष्टकमाहासुवनननरागादवीश्रदवमसहस्रत्रिनयनम्यरुषीत्व
रुवसुविताधिवआयुवसा ॥ ॥ हां नूनी (माझां नू ध्वनं कामदवहसं या
रुथधीक्षाया अद्वधीनी नहयावविष्ठाक साहालाचकाव हां नू ध्वनी कि
नसंकायमाने ध्वगुलिमंगलासुके अगुयादागुगुलि कुलपील संडसंरु
वविष्ठाचमालप्रकाव डोझासुथन धेधेवां नम्रावनमस्तकवयागा ~~मस्तक~~

१६

दिल्य मयसादिल्य धनकाया कथा नसंरु कयादाव आदिल्यव
व ध्वश्रुध्यायखाठनिवडाकां मनरुयागववलसं नचकसवनममाल
धकाव धधधीमाहादवन आह्लादताधके धीसुथन दावनी काना
धगुलिखां कुमालन अगसु काना धगुलिखां नेमिखो नधस वास
नसुतकाना ॥ ॥ नूनिधी सनहवां दसुनीनहो धी
~~नूनिधी सनहवां दसुनीनहो धी~~ ॥ ॥ आदिल्यवनकथासमाकथा ॥

१ वेष्मणि तय दत्त अमावास्या श्रावण वशां । अष्टौ वा गेठ हस्तौ च विमघ
 वद कर्क ॥ वसुव हकाय तन दती कृत तये च वा त व द व द सा द न व विव
 त क थ लिख ॥ अवेता विममन व वक्ष विष्णु मरु शुक्रा वक्ष नूद देव दू व वि
 प्रू नू द कूर्व विव ॥ राम व राज च व व ह्य ये गेठ ग व उ च । विव शुक्र को मि य
 व अर्द्ध अर्द्ध ऊना य च ॥ नया राज वि राज च ह्य गो नू न ये व च लिखि म
 धन सिंद व ॥ शुक्र व यो मि काम या ॥ ॥ सौ च वी शुक्र अष्टन व ॥ शुक्र म नू ॥

अष्टम मरु कथि
 ७५३